सम्माननीया,

डा॰ प्रतिभा देवी सिंह पाटिल जी

राष्ट्रपति, भारत

विषयः **सुप्रसिद्ध पार्श्व गायक 'मो0 रफी साहब' के कार्यों के यथोचित मूल्यांकन के संदर्भ में।**

महोदया,

पार्श्वगायन के सरताज 'मो0 रफी साहब' का महत्व आज केवल इसलिए नहीं है कि उन्होंने हजारों की संख्या में हर तरह के गीत गाए और अपने गीतों के जरिए जिन्दगी के विभिन्न पहलुओं की अभिव्यक्ति की बल्कि इसलिए भी है कि सामाजिक, जातीय व धार्मिक संकीर्णताओं से ग्रसित इस दौर में वह 'इंसानियत, मानवीय मूल्यों, देश प्रेम, धर्मनिरपेक्षता एवं साम्प्रदायिक सद्भाव' के एक मजबूत प्रतीक हैं। उनके गाए गीत नैतिक , सामाजिक एवं भावनात्मक अवमूल्यन के आज के दौर में जनमानस को इंसानी रिश्तों, नैतिकता एवं इंसानियत के लिए प्रेरित कर रहे हैं। मो0 रफी साहब के निधन के कई वर्षों के बाद आज भी उनकी सुरीली आवाज का जादू लोगों के सिर चढ़ कर बोल रहा है।

'मो0 रफी साहब ' बड़े गायक थे या कोई और, इस विषय पर लोगों की अलग-अलग राय हो सकती है , लेकिन इस बात पर शायद ही कोई विवाद हो कि गायकों में तो क्या सम्पूर्ण कलाक्षेत्र की हस्तियों में साम्प्रदायिक सद्भाव, धर्मनिरपेक्ष और राष्ट्रीय अखण्डता का सबसे बड़ा प्रतीक अगर कोई है तो वह हैं 'मो0 रफी साहब'।

मो0 रफी साहब के महत्व की उपेक्षा अनेक स्तरों पर अब तक होती आयी है। भारत सरकार ने केवल उन्हें 'पद्मश्री' से सम्मानित किया जबकि उनके समकालीन गायक अथवा गायिकाओं में से कई को 'भारत रत्न' एवं 'दादा साहब फाल्के पुरस्कार' जैसे सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है।

बात यहाँ 'भारत रत्न' या इससे ऊपर या कमतर पुरस्कार को उन्हें दिए जाने की नहीं है बल्कि कराड़ों लोगों को मलाल इस बात का है कि आज उनकी मृत्यु के लगभग 30 वर्ष बाद भी उनके कार्यों का न ही यथोचित मूल्यांकन किया गया और न ही उनके द्वारा किए गए साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखने के प्रयत्नों तथा भारतीय संगीत व संस्कृति को समृद्ध बनाने के उनके अतुलनीय योगदान को सराहा गया। यदि उनके कार्यों का यथोचित मूल्यांकन समय रहते न हुआ तो सम्पूर्ण भारतवर्ष उनके द्वारा की गयी संगीत सेवा के ऋ ण तले सदैव दबा रहेगा और प्रकृति की निगाह में संम्पूर्ण राष्ट्र उनके प्रति कृतघ्नता का कलंक कभी भी धो न पाएगा।

अंत में इस पत्र के माध्यम से हम आपसे विनम्र अनुरोध करते हैं कि **इससे पहले कोई अन्य देश उनके महत्व को समझ कर उन्हें पुरस्कृत करे,**करोड़ों दिलों की आवाज 'मो0 रफी साहब' के भारतवर्ष के्र प्रति किए गए योगदानों का यथोचित मूल्यांकन करके -

- उन्हें सर्वोच्च भारतीय पुरस्कार **'भारत रत्न'** से सम्मानित किया जाए।
- मो0 रफी साहब के नाम से राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का एक स्मारक, संगीत संग्रहालय एवं संगीत प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की जाए।
- मो0 रफी साहब को 'राष्ट्र गायक' का दर्जा दिया जाए।
- रफी साहब के जन्मदिवस 24 दिसम्बर को 'संगीत दिवस'के रूप में घोषित किया जाए।
- जिस प्रकार बिसमिल्ला खाँ एवं कैफी आजमी साहब जैसी विभूतियों को हिन्दी पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है उसी प्रकार रफी साहब के व्यक्तित्व को भी माध्यमिक अथवा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए ताकि आने वाली पीढ़ियाँ उनके व्यक्तित्व से परिचित हो सकें।

- मो0 रफी साहब के नाम से संगीत क्षेत्र में एक राष्ट्रीय पुरस्कार की घोषणा की जाए।

महोदय, आपसे पुनः विनम्र अनुरोध है कि उपर्युक्त सुझावों पर विचार करते हुए 'मो0 रफी साहब' के योगदानों का यथोचित मूल्यांकन करके करोड़ों संगीत प्रेमियों एवं समस्त भारतवासियों को उनके प्रति कृतघ्न होने से बचाएं।

धन्यवाद !

प्रेषकः-